8

बहुकक्षीय शिक्षण की चुनौतियाँ तेलंगाना राज्य के शिक्षकों के अनुभव

मेघा चौधरी*

बहुकक्षीय शिक्षण में शिक्षक एक ही समय पर एक साथ दो या दो से अधिक कक्षाओं को पढ़ाता है। यह परिस्थिति हमारे देश में प्राथमिक स्तर पर आम रूप से देखने को मिलती है। शिक्षकों की कमी से लेकर आधारभूत संरचना का अभाव आदि अनेक ऐसे कारण हैं, जो इन परिस्थितियों को जन्म देते हैं। इन्हीं परिस्थितियों और इससे जुड़ी चुनौतियों को समझने के लिए तेलंगाना के बहुकक्षीय विद्यालयों में कार्यरत कुछ शिक्षकों से संपर्क किया गया और इस लेख के माध्यम से उनके सामने आने वाली चुनौतियों को जानने की कोशिश, एक शोध परियोजना के अंतर्गत की गई है।

एक सामान्य प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक आमतौर पर बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करता है। जब स्थिति बहुकक्षीय हो जाए, तो यह कठिनाइयाँ और भी जटिल हो जाती हैं। हालाँकि, ऐसे शिक्षक अपनी तरफ से वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिए बहुत से प्रयत्न करते हैं लेकिन जब तक इन प्रयासों को प्रशासनिक स्तर पर सहायता नहीं मिलती, तब तक इन परिस्थितियों में बदलाव की अपेक्षा महज़ एक दुविधा भरा विचार बन कर रह जाता है। शिक्षकों को बहुकक्षीय विद्यालयों में शैक्षिक एवं प्रशासनिक प्रशिक्षण देकर, उनके लिए इन कठिनाइयों को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से विद्यार्थियों के अधिगम का स्तर भी बेहतर किया जा सकता है।

पढ़ना-पढ़ाना और सीखना, शिक्षा की महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ हैं, जिसे पूरा करने के लिए शिक्षक और विद्यार्थी विशेष रूप से कुछ कदम उठाते हैं। ये कदम उन्हें शिक्षा से जुड़े प्रतिफलों के करीब ले जाते हैं। इस प्रक्रिया की शुरुआत शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों की ज़रूरतों के आकलन तथा शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करने से होती है। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वे शिक्षण योजनाओं का निर्माण करते हैं तथा उत्तरोतर इन योजनाओं का विकास एक सतत प्रक्रिया के अनुरूप होता रहता है। अंत में इन योजनाओं पर आधारित विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी अध्ययन तथा अभ्यास के माध्यम से सूचनाएँ

*कनिष्ठ परियोजना अध्येता (जे.पी.एफ़.), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

एवं ज्ञान प्राप्त करते हैं। पठन-पाठन की यह प्रक्रिया विभिन्न कक्षाओं एवं विद्यालयों में अलग-अलग होती है, फलस्वरूप शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के अनुभव भी भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं।

जब भी शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में विचार करेंगे तो पाएँगे कि ऐसे कई कारक और पक्ष हैं, जो कि इस गुणवत्ता को प्रभावित करने में महती भूमिका निभाते हैं। शिक्षा के लिए उपलब्ध आधारभूत संरचना (infrastructure) से लेकर कक्षा का माहौल तथा शिक्षकों की उपलब्धता ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं। ऊपर से देखने पर हर कक्षा का स्वरूप भले ही एक जैसा लगे, लेकिन प्रत्येक कक्षा अपने आप में विशेष तथा दूसरी किसी भी कक्षा से भिन्न होती है। शिक्षक द्वारा किसी कक्षा में पढ़ाए जाने का तरीका इस भिन्नता के सबसे बड़े कारणों में से एक है। यह शिक्षा की गुणवत्ता के साथ ही इस शिक्षण की पूरी प्रक्रिया को भी महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है।

पठन-पाठन के तरीके तथा उनके परिणाम प्रत्येक कक्षा के परिस्थितिजन्य कारकों से प्रभावित होते हैं तथा परिणामस्वरूप भी भिन्न होते हैं। शिक्षकों की उपलब्धता, कक्षा-कक्ष का आकार, बैठने की व्यवस्था, बच्चों की नियमितता आदि ऐसे ही कुछ कारण हैं।

बहुकक्षीय कक्षा का स्वरूप एवं शोध

हमारे देश में शिक्षा के लिए उपलब्ध आधारभूत ढाँचे की भारी कमी है। अतः इस कमी से निपटने के लिए प्राथमिक स्तर पर बहुकक्षीय शिक्षण का विचार एक आम परिस्थिति है। बहुकक्षीय कक्षा में एक शिक्षक, एक ही समय पर एक साथ दो या दो से अधिक कक्षाओं को पढ़ाता है। एक बहुकक्षीय कक्षा की मौजूदगी शिक्षण प्रक्रिया में बहुत-सी चुनौतियों को पैदा करती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण पठन-पाठन से संबंधित चुनौतियाँ हैं। इन्हीं चुनौतियों को समझने और आगे रखने के लिए प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा किए गए एक शोध परियोजना से मिले अनुभवों को सामने लाने के लिए यह लेख लिखा गया है।

एक साधारण प्राथमिक विद्यालय की परिकल्पना यही है कि उसमें पाँचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए पर्याप्त मात्रा में कक्षों तथा अध्यापकों की उपलब्धता हो। जब इस तरह की उपलब्धता में किसी भी तरह की कमी हो तब बहुकक्षीय कक्षा के निर्माण की पूरी संभावना होती है। यह स्थिति उन सभी विद्यालयों में पायी जाती है जहाँ पर या तो अध्यापकों की कमी है या फिर बैठने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। यदि दोनों ही स्थितियाँ पायी जाएँ, तो समस्या की गंभीरता अधिक हो जाती है।

बहुकक्षीय शिक्षण से संबंधित समस्याएँ

यह शोध कार्य ऐसे विद्यालयों में किया गया, जहाँ बहुकक्षीय व्यवस्था के तहत शिक्षण कार्य संपन्न हो रहा है। इस शोध कार्य में इस व्यवस्था से उपजी चुनौतियों तथा समस्याओं को समझने की कोशिश की जा रही है। प्रस्तुत लेख में संबंधित जानकारी तेलंगाना राज्य में हुए शोध प्रशिक्षण के तहत अलग-अलग विद्यालयों के 20 शिक्षकों से एकत्रित की गई। इस दौरान इन शिक्षकों ने एक शोध उपकरण, जिसे तीन

वर्गों में बाँटा गया है, को अपने अनुभवों के आधार पर साझा किया। ये तीन वर्ग निम्न प्रकार हैं—

- बहुकक्षा शिक्षण से संबंधित पठन-पाठन के मुद्दे
- कक्षा वातावरण तथा कक्षा प्रबंधन से संबंधित मुद्दे
- बच्चों से संबंधित समस्याएँ

1. पठन-पाठन के मुद्दे

पठन-पाठन की प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन शिक्षक के ऊपर अत्यधिक ज़िम्मेदारियाँ होने के कारण इस प्रक्रिया के प्रतिफल का उत्तरदायित्व शिक्षक के ऊपर अधिक आता है। इस शोध उपकरण के द्वारा यह समझने की कोशिश की गई है कि एक बहुकक्षीय कक्षा में पठन-पाठन की प्रक्रिया के दौरान शिक्षक के सामने प्राय: किस प्रकार के व्यवधान आते हैं।

रेखाचित्र 1 के जरिए यह समझा जा सकता है कि एक बहुकक्षीय कक्षा में शिक्षक के ऊपर अत्यधिक कार्यभार होता है और 80 प्रतिशत शिक्षकों ने अपनी इस बात को आगे रखा है।

साथ ही दूसरी कक्षा को पढ़ाने से अचानक कक्षा के वातावरण में परिवर्तन का अनुभव होता है। कुल शिक्षकों में से 75 प्रतिशत का यह भी मानना है कि अलग-अलग कक्षाओं को एक साथ पढ़ाने से शिक्षक का ध्यान भटकता है और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर शिक्षक विशेषत: कम ध्यान दे पाते हैं। 65 प्रतिशत शिक्षकों ने इस उपकरण में यह भी स्पष्ट किया कि बहुकक्षीय शिक्षण के दौरान तरह-तरह के व्यवधान होते हैं। इसके साथ बच्चों के पढ़ने की प्रक्रिया को समझने में भी परेशानी होती है।

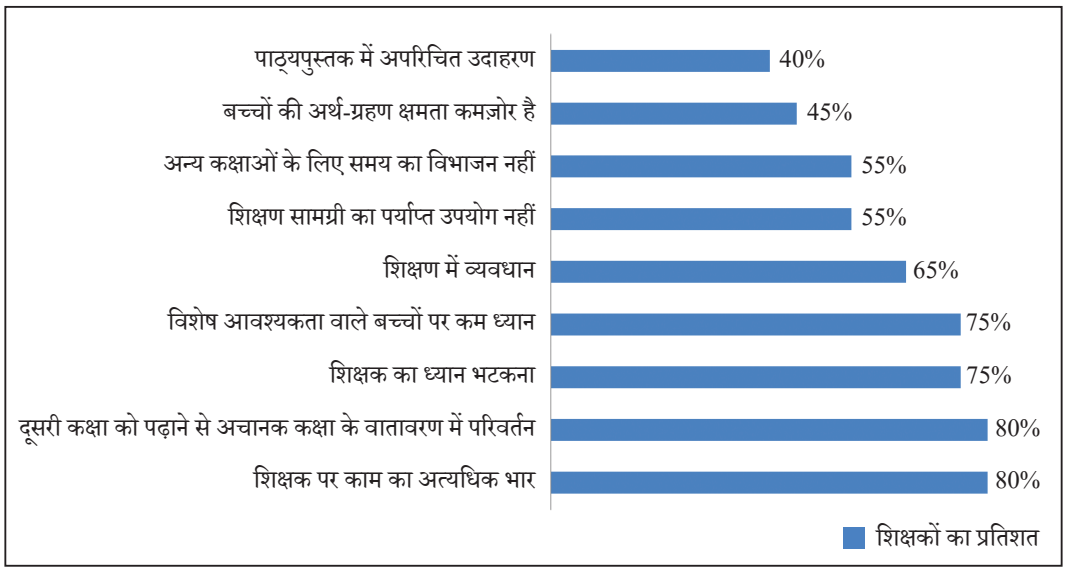

रेखाचित्र 1 — पठन-पाठन के मुद्दे

स्रोत — 'An exploratory study of teaching learning issues in multigrade settings at the primary level.' रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा स्वीकृत परियोजना

रेखाचित्र 1 से यह भी स्पष्ट होता है कि 55 प्रतिशत शिक्षक एक बहुकक्षीय कक्षा में शिक्षण सामग्री का पर्याप्त उपयोग नहीं कर पाते। साथ ही एक ही कक्षा को लगातार पढ़ाते हुए अन्य कक्षाओं के लिए समय का विभाजन करना भी बहुत मुश्किल होता है। 45 प्रतिशत शिक्षकों ने यह भी कहा है कि एक बहुकक्षीय कक्षा में बच्चों की अर्थ-ग्रहण क्षमता कमज़ोर हो जाती है।

कुछ समस्याएँ ऐसी भी हैं, जिसके विषय में शिक्षकों को लगता है कि पूर्णरूप से ऐसी समस्याएँ सभी विद्यालयों में होती हैं, भले ही वह बहुकक्षीय हों या ना हों। कई बार ऐसा देखने में आता है कि पाठ्यपुस्तक में दिए गए अपरिचित उदाहरणों तथा उन्हें समझने के लिए बच्चों को शिक्षक की सहायता का अभाव होता है। 40 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार यह एक सामान्य प्राथमिक विद्यालय में मिलने वाली समस्या है।

2. कक्षा वातावरण तथा कक्षा प्रबंधन से संबंधित मुद्दे

जिस तरह से पठन-पाठन की प्रक्रिया पूरी शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है उसी तरह कक्षा के वातावरण की भी इस शैक्षिक प्रक्रिया में अपनी एक आवश्यक जगह है। वे सभी कारक जो किसी भी तरह से कक्षा में सीखने और सिखाने को प्रभावित करते हैं, इस वातावरण का हिस्सा हैं।

रेखाचित्र 2 से यह समझने की कोशिश की जा सकती है कि कक्षा वातावरण तथा इससे संबंधित कौन-से मुद्दे, किस प्रकार बहुकक्षीय कक्षा में शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए समस्या पैदा करते हैं।

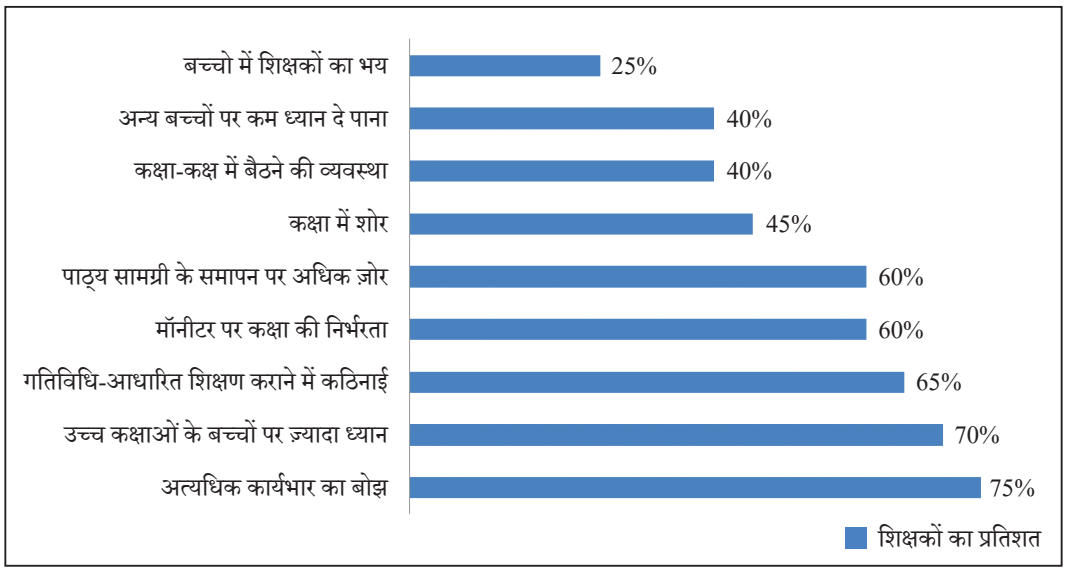

रेखाचित्र 2 — कक्षा के वातावरण तथा कक्षा प्रबंधन से संबंधित मुद्दे

स्रोत — 'An exploratory study of teaching learning issues in multigrade settings at the primary level.' रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा स्वीकृत परियोजना

कुल 75 प्रतिशत शिक्षकों का यह मानना है कि जब वह एक से ज़्यादा कक्षाओं को एक समय पर पढ़ाते हैं तब उन शिक्षकों के ऊपर अत्यधिक कार्यभार का बोझ होता है। 70 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं कि एक बहुकक्षीय कक्षा में उच्च कक्षाओं के बच्चों पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है। 60 प्रतिशत शिक्षकों का यह भी मानना है कि एक बहुकक्षीय कक्षा में कक्षा मॉनीटर पर शिक्षक की निर्भरता बढ़ जाती है और पाठ्यक्रम के समापन पर शिक्षक का आवश्यकता से अधिक ज़ोर रहता है।

जब एक ही कक्षा में अलग-अलग स्तर के बच्चे एक साथ होते हैं, उस स्थिति में 65 प्रतिशत शिक्षकों का यह कहना है कि कक्षा में गतिविधि-आधारित शिक्षण तथा कक्षा से बाहर गतिविधि कराने में कठिनाई होती है। 45 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार बहुकक्षीय कक्षा में एक से अधिक भाषा बोलने वाले बच्चे उपस्थित होते हैं और कक्षा में शोर की समस्या भी देखने को मिलती है। 40 प्रतिशत शिक्षकों ने यह भी माना है कि बहुकक्षीय कक्षा-कक्ष में बैठने की व्यवस्था एक ऐसा मुद्दा है जो कक्षा में व्यवधान होने का अहम कारण है। इसी के साथ इतने ही शिक्षकों का यह भी मानना है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के होने से कक्षा के अन्य बच्चों पर कम ध्यान दिया जाता है। बच्चों का शिक्षकों से डरना एक ऐसा बिंदु है जो शिक्षकों के अनुसार अधिकतर स्कूलों में होता है, 25 प्रतिशत शिक्षकों के हिसाब से एक सामान्य प्राथमिक विद्यालय में अधिकतर बच्चे शिक्षक से डरते हैं।

3. बच्चों से संबंधित समस्याएँ

एक बहुकक्षीय कक्षा में जितनी चुनौतियाँ शिक्षक को पढ़ाने में आती हैं, संभवत बच्चों को भी कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा। शैक्षिक

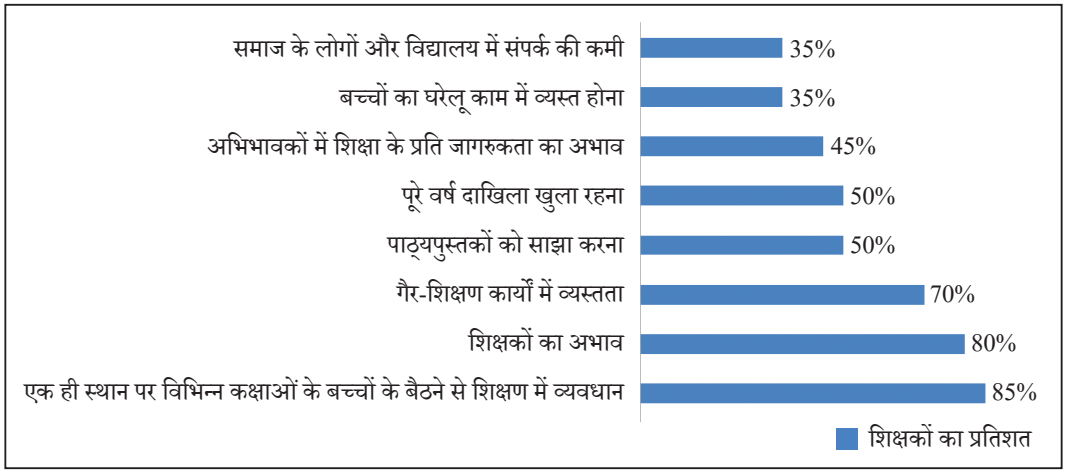

रेखाचित्र 3 — बच्चों से संबंधित समस्याएँ

स्रोत — 'An exploratory study of teaching learning issues in multigrade settings at the primary level.' रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा स्वीकृत परियोजना

प्रक्रिया में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही महत्वपूर्ण अंग हैं। तीसरे शोध उपकरण के द्वारा शिक्षकों से यह जानने का प्रयास किया गया कि एक बहुकक्षीय कक्षा में बच्चों को किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

रेखाचित्र 3 को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि 85 प्रतिशत शिक्षक इस बात से सहमत हैं कि एक ही स्थान पर विभिन्न कक्षाओं के बच्चों के बैठने से शिक्षण में व्यवधान की स्थिति उत्पन्न होती है। वहीं, 80 प्रतिशत यह भी मानते हैं कि पूर्णकालिक शिक्षकों के अभाव से भी बच्चों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 70 प्रतिशत शिक्षकों ने यह माना कि गैर-शिक्षण कार्यों में शिक्षकों की व्यस्तता के चलते बच्चों के लिए शिक्षकों की उपलब्धता में कमी आती है, जिससे कि विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की एक दूसरे तक पहुँच सीमित हो जाती है।

बच्चों द्वारा पाठ्यपुस्तकों को साझा करना 50 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार बहुकक्षीय कक्षा की समस्या है। इसके साथ ही इतने ही शिक्षकों का यह भी मानना है कि पूरे वर्ष दाखिला खुला रहने से कक्षा में पढ़ रहे बच्चों को कठिनाई होती है। अभिभावकों के बारे में 45 प्रतिशत शिक्षकों का यह मानना है कि उनमें अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरुकता का अभाव है। वहीं, 35 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं कि प्राथमिक विद्यालयों में समाज के लोगों और विद्यालय में संपर्क की कमी है। लगभग इतने ही प्रतिशत शिक्षकों ने यह भी बताया कि बच्चे घरेलू काम में व्यस्त रहते हैं तथा अपनी पढ़ाई में पूरी तरह रुचि नहीं ले पाते।

निष्कर्ष

एक बहुकक्षीय कक्षा में पठन-पाठन की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों को बहुत-सी शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सबसे ज़्यादा कठिनाई अलग-अलग कक्षाओं का एक ही समय पर प्रबंधन करने में आती है। इसका सीधा असर कक्षा के वातावरण तथा पढ़ाई पर दिखाई देता है। एक सामान्य विद्यालय में भी शिक्षकों के लिए स्कूल प्रबंधन एवं गैर शैक्षिक कार्य पूरे करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इसी संदर्भ में बहुकक्षीय स्कूलों की बात करें, तो वहाँ यह चुनौती और अधिक बढ़ जाती है।

इस पूरे शोध कार्य की प्रक्रिया में बहुकक्षीय शिक्षण से जुड़ी बहुत-सी चुनौतियाँ सामने आईं, जिनका सामना इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक दिन-प्रतिदिन करते हैं। हालाँकि, शिक्षक इन चुनौतियों को हल करने के लिए अपनी ओर से अलग-अलग प्रयोग करते हैं, लेकिन यह प्रयोग स्वभाव में अस्थायी ही है। शिक्षकों ने यह भी बात सामने रखी कि बहुश्रेणी कक्षा-कक्ष के प्रबंधन से संबंधित मुद्दे एवं उनके संचालन के बारे में सेवापूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण में जानकारी न के बराबर ही मिल पाती है।

इन परिस्थितियों में सुधार ही शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बना सकता है। इसकी शुरूआत बहुकक्षीय कक्षाओं में कार्यरत शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण देकर की जा सकती है, जो उन्हें इन सभी समस्याओं पर रचनात्मक एवं सकारात्मक तरह से सोचने की तरफ अग्रसर कर सके। इसी के साथ यह भी सोचना लाभदायक हो सकता है कि किस तरह इन बहुकक्षीय कक्षाओं में एकीकृत शिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।

जिससे शिक्षकों के लिए अलग-अलग कक्षाओं को एक ही समय पर पढ़ाना एवं सँभालना थोड़ा प्रबंधनीय हो सके।

प्राथमिक विद्यालयों में प्रबंधन से लेकर शिक्षण तक बहुत-सी अलग-अलग परिस्थितियाँ एवं चुनौतियाँ हैं। बहुकक्षीय कक्षाएँ एवं विद्यालय भी इसी शिक्षा प्रणाली का हिस्सा हैं। यदि समग्र रूप से प्राथमिक शिक्षा में सुधार या बदलाव की बात करते हैं, तो हमें इन बहुकक्षीय विद्यालयों को भी साथ लेकर समस्याओं का स्थायी समाधान निकालना होगा।

संदर्भ

कैथरीन, कायनी. 2004. टीचिंग एंड लर्निंग इन मल्टीग्रेड क्लासरूम्स — व्हॉट टीचर्स से. द *आयरिश जर्नल ऑफ़ एजुकेशन*, पृ. 5–19, एजुकेशनल रिसर्च सेंटर, आयरलैंड.

गार्डिया, ए. 2015. कैसे सुधारें सरकारी शिक्षकों की कार्य कुशलता? एक विमर्श. *प्राथमिक शिक्षक*, पृ. 51–54, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

बिहंमेर, ए.के. 2015. मल्टीग्रेड टीचिंग प्रैक्टिसेज़ इन ऑस्ट्रियन एंड फिन्निश प्राइमरी स्कूल्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*, 74, पृ. 104–113. एल्सवीर लि., ऑस्ट्रिया.

रा.शै.अ.प्र.प. 2009. *टीचर्स रिसोर्स मैटीरियल ऑन मल्टीग्रेड/मल्टीलेवल टीचिंग*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.